[illegible]

जैन दर्शन का प्रमाणशास्त्र

जैन दर्शन में प्रमाण शास्त्र एवं तर्क शास्त्र का महत्वपूर्ण योगदान है। जैन अपने प्रमाण शास्त्र में ज्ञान के दो भेद बतलाती है ① अपरोक्ष ज्ञान ② परोक्ष ज्ञान। जैनों के मत में इंद्रिय ज्ञान को सामान्यतः अपरोक्ष माना जाता है वह आपेक्षिक अपरोक्ष है। इन्द्रिय और मन के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है वह अनुमान की तुलना में अवश्य अपरोक्ष है परंतु इसे मौलिक कहना भ्रामक है। इसे अपरोक्ष ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान कहा जाता है। परोक्ष ज्ञान के दो भेद हैं- ① मति ② श्रुत किंतु अपरोक्ष ज्ञान के तीन भेद हैं- ① अवधि ② मनःपर्याय ③ केवल।

मति ज्ञान- इन्द्रिय और मन के द्वारा प्राप्त ज्ञान है।

श्रुत ज्ञान- सुने हुए वचन तथा प्रामाणिक ग्रन्थों से प्राप्त ज्ञान को कहते हैं। जिसमें इन्द्रिय ज्ञान का रहना आवश्यक है। जैनों के मतानुसार इनमें दोष की सम्भावना रहती है।

अवधि ज्ञान- कर्म बाधाओं के हट जाने पर वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें सूक्ष्म तथा अस्पष्ट द्रव्यों का ज्ञान हो जाता है।

मनःपर्याय ज्ञान- राग, द्वेष पर विजय प्राप्त करते हैं। इस ज्ञान से हम दूसरों के मन की बात जान पाते हैं।

केवल ज्ञान- यह ज्ञान मुक्ति के बाद ही प्राप्त होता है।

मनःपर्याय और केवल ज्ञान दोषरहित हैं।

जैनों के ज्ञानमीमांसा में ज्ञान के दो प्रकार माने गये हैं- ① प्रमाण ② नय।

प्रमाण- यह अनेक वस्तुओं का यथार्थ ज्ञान है। जैनों ने तीन प्रकार के प्रमाण की मान्यता दी है- प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द। ② नय- नय किसी वस्तु को समझने का एक दृष्टिकोण है। यह पूरी वस्तु को न समझकर उसके अंश को समझता है। वस्तु के आंशिक ज्ञान को नय कहते हैं। यह प्रमाण शास्त्र का महत्वपूर्ण अंग है।